

हर हर शंकर

जय जय शंकर

ॐ



श्री-वेदव्यासाय नमः

श्रीमद्-आद्य-शंकर-भगवत्पाद-परंपरागत-मूलान्नाय-
सर्वज्ञ-पीठं श्री-कांची-कामकोटि-पीठं
जगद्गुरु-श्री-शंकराचार्य-स्वामि-श्रीमठ-संस्थानम्

श्रीमठीय-पंचांग-सदः वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा च

॥ विश्वावसु-कुंभ-फाल्गुन-पूर्णिमा - चंद्र-ग्रहणम् ॥

राहु-पुच्छ-(“केतु”-)-ग्रस्तम्। 3-मार्च-2026।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857



vdspsabha@gmail.com



vdspsabha.org

ग्रहण-समयाः कार्यक्रमश्च | मार्च ३

स्पर्शः	21:57	आरंभ-स्नानम् (संकल्पः),
निमीलनम्	16:34*	तर्पणम् (संकल्पः), जपः
मध्यम्	17:03*	दानम् (संकल्पः)
उन्मीलनम्	17:33*	मोक्ष-स्नानम् (संकल्पः)
मोक्षः	18:47	

ग्रहण-पूर्णता-आरंभः, उन्मीलनम् = ग्रहण-पूर्णता-समाप्तिः

ग्रहण-प्रमाणम् - पूर्णम्

पीडितानि नक्षत्राणि

पूर्व-प्रोष्ठपदा*, शतभिषक्, उत्तर-प्रोष्ठपदा, पुनर्वसुः, विशाखा

(प्राचीन-वाक्य-गणित-दृष्ट्या इमानि अपि - शतभिषक्, श्रविष्ठा, आर्द्धा, स्वाती)

पीडिताः राशयः

अधिकम्	कुंभः*	मीनः	कटकः	वृश्चिकः
मध्यमम्	मिथुनम्	सिंहः	तुला	मकरः

(* = ग्रहणकालिकम्)

(शांति-श्लोकाः)

एषां राशीनां शुभ-फलम् - मेषः, वृषभः, कन्या, धनुः।

Contributors

Guidance: Brahmashri Sundararama Vajapeyi; **Compilation:** Brahmashri Shriramana Sharma; **Typesetting:** Prof Karthik Raman; **Technical assistance:** Smt Vidya Jayaraman; **Reference assistance:** Chi Nidhishvara Shrauti

Translations – English: Brahmashri Dr T Vasudevan, **Telugu:** Brahmashri Thanjavur Venkatesan, **Malayalam:** Vidvan Vasudevan Nambudiri, **Kannada:** Dr Ramprasad, **Hindi:** Kum Vanchitha Bharanidharan

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857

vdspsabha@gmail.com

vdspsabha.org

इस ग्रहण के लिए सूचनाएं

आहार नियम

- एक दिन या रात का एक चौथाई (लगभग ३ घंटे) एक याम कहा जाता है।
- ग्रहण का पहला दिन के मध्याह्न (दोपहर लगभग १२ बजे) से पहले भोजन अनुमत है। (अखंड) भारत के अत्यंत पश्चिम में कई भागों में (नारायण सरोवर, कराची) उस दिन पहले याम (लगभग ०९:४५) तक ही आहार अनुमत है।
- इसके अनुसार उस दिन किया जानेवाला पूर्णिमा तिथि का श्राद्ध दूसरा दिन (प्रतिपदा के दिन) करना चाहिए।
- उस रात भोजन नहीं करना है।
- जो भोजन के बिना नहीं रह सकते, जैसे बालक एवं वृद्ध, वे यथाशीघ्र सूर्यास्त के पहले ही दलिया जैसे अल्प भोजन लेना व्यावहारिक होगा।
- ग्रहण के दौरान निश्चित रूप से कुछ भी न खाएं।

सटीक चंद्र ग्रहण अनुष्ठान अवधि

- आधुनिक प्रकाशन इस ग्रहण का अवधि के रूप से २०:५८ से ०२:२५ तक दिखा सकता है। लेकिन यह आंखों को नहीं दिखनेवाली उपच्छाया ग्रहण स्थिति से जोड़ा है। २१:५७ से ०१:२६ तक ही आंखों को दिखनेवाली, एवं अनुष्ठान के लिए योग्य, प्रधान छाया ग्रहण स्थिति का ठीक अवधि है।

भारत में दिखाई देनेवाले अगले ग्रहणों

- अगला चंद्र ग्रहण छह मासों के बाद विश्वावसु वत्सर के कुंभ फाल्गुन पूर्णिमा (२०२६ मार्च ०३) शाम को होगा।
- अगला सूर्य ग्रहण दो साल बाद पूर्वंग वत्सर कटक आषाढ अमावास्या (२०२७ अगस्त ०२) को होगा।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

📞 9884655618 📨 8072613857 📩 vdspsabha@gmail.com 🌐 vdspsabha.org

⇒ प्रयोगः

सारे ग्रहण के लिए सामान्य सूचनाएँ

ज्यौतिष विवरण

- पृथ्वी की छाया जब चंद्र पर पड़े उसी को हम चंद्र ग्रहण कहते हैं। इसलिए हमारे जगह के हिसाब से चंद्र ग्रहण के प्रारंभ और समाप्ति की समय नहीं बदलेगी।
- लेकिन सूर्य ग्रहण में चंद्र की छाया भूमि पर पड़ती है। जैसे-जैसे यह छाया भूमि पर गुज़री जाती है, सूर्य ग्रहण प्रारंभ और समाप्ति की समय अलग-अलग जगह में अलग-अलग होती है।
- अमावास्या-प्रथमा या पूर्णिमा-प्रथमा सन्धि को पर्व कहते हैं।
- पूरी पृथ्वी को ध्यान में रखते हुए, सूर्य ग्रहण इस पर्व के पहले अमावास्या में एक जगह में प्रारंभ होकर उस के बाद प्रथमा में और एक जगह में समाप्त होती है। परन्तु विशिष्ट शहरों के विषय अलग है। सुबह होनेवाली ग्रहण अमावास्या के अंदर हि प्रथमा के पहले समाप्त हो सकती है। और शाम को होनेवाली ग्रहण अमावास्या के बाद प्रथमा में प्रारंभ हो सकती है।
- लेकिन चंद्र ग्रहण में तो पूरी पृथ्वी को एक ही प्रारंभ और समाप्ति की समय होती है, इसलिए हमेशा पर्व के पहले प्रारंभ होकर पर्व के बाद समाप्त होती है।
- ग्रस्त उदय के विषय में, हमारे शहर में सूर्य या चंद्र की उदय से पहले ही ग्रहण प्रारंभ हो जाती है। लेकिन यह स्पष्ट है कि ग्रहण हमें उदय से ही दिखाई देगी।
- ग्रस्त अस्तमय के विषय में, हमारे शहर में सूर्य या चंद्र की अस्तमय के बाद ग्रहण समाप्त हो जाएगी। लेकिन यह स्पष्ट है कि ग्रहण हमें अस्तमान तक ही दिखाई देगी।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

9884655618

8072613857



vdspsabha@gmail.com



vdspsabha.org

- चंद्र ग्रहण के विषय में, पृथ्वी की उपच्छाया (जहाँ सूर्य के सिर्फ एक भाग अदृश्य होगी) के कारण हमारी आँखों के लिए प्रत्यक्ष रूप में रंग बदली हुई नहीं दिखती। इसलिए तब अनुष्ठान नहीं है।

भोजन नियम

- सूर्य ग्रहण के पहले चार याम (≈ 12 घंटे) और चंद्र ग्रहण के पहले तीन याम (≈ 9 घंटे) आहार नहीं करना चाहिए।
- सूर्य ग्रस्तोदय की पहली रात और चंद्र ग्रस्तोदय की पहली दिन में भोजन न करें।
- सूर्य ग्रस्तास्तमय की अगली रात और चंद्र ग्रस्तास्तमय की अगली दिन में भी भोजन न करें।
- छोटे बच्चे (≈ 7 साल), बूढ़े लोगों (≈ 70 साल) और बीमारों को ये नियम नहीं है। अगर पूरा भूखे नहीं रह सकते तो, फल और दूध जैसे लघु आहार कर सकते हैं वो भी ग्रहण के एक याम (≈ 3 घंटे) पहले लें।
- किसी भी स्थिति में ग्रहण की समय में आहार नहीं ले सकते हैं।
- यह सब नियम शिशुओं का स्तन्य पान से नहीं संबंधित है। बच्चा के उम्र के अनुसार कर सकते हैं।
- पानी, कच्ची चीज़ें (जो उबालके पका नहीं) - इनके शुद्धि के लिए इनमें दर्भ के टुकड़े डालने का रिवाज है। इन चीजों को ग्रहण के बाद खा सकते हैं। लेकिन ग्रहण के पहले पकाए हुए (उबालके पके हुए) चीजों को ग्रहण के बाद नहीं खा सकते।

अनुष्ठान की आरंभ

- ग्रहण आरंभ होने के पहले ही बदलने के कपड़े, अनुष्ठान के लिए आवश्यक आसन, तीर्थ पात्र आदि को तैयार रखें। तर्पण करने वाले लोग उसके लिए

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

आवश्यक तिल, कूच, दर्भ, तर्पणकरने के लिए पुस्तकें पहले से निकालकर रखें।

- ग्रहण आरंभ होने के बाद, पहने हुए वस्त्र के साथ ही स्नान करना चाहिए। तर्पण के लिए जल ही लेकर रखें। पहले ही तैयार रखे हुए वस्त्र को पहनें।

ग्रहण आशौच

- ग्रहण की समाप्ति के बाद स्नान करने तक, ग्रहण के लिए आवश्यक वस्तुओं के अलावा बाकी वस्तुओं विशेष रूप से बिस्तर, चटाई, कपड़े आदि को नहीं छूना। छुए हुए वस्तुओं को ग्रहण के बाद धोकर ही उपयोग करें। इस नियम को ग्रहण आशौच कहते हैं।

- बाकी आशौच अनुष्ठान करने वाले मतलब जन्म या निधन के आशौच अनुष्ठान करने वाले भी ग्रहण के समय में शुद्ध हो जाते हैं। इसी लिए वो लोग भी यथा विधि अनुष्ठान करें। रजस्वला भी अलग जल से ग्रहण का स्नान करना चाहिए।

ग्रहण श्राद्ध

- ग्रहण के समय में पूर्वजों को श्राद्ध / तर्पण करना चाहिए। रात में आनेवाले चन्द्र ग्रहण में भी ये नियम है।
- सूर्य ग्रहण के विषय में यदि अमावास्या उसी दिन आति है जिस दिन श्राद्ध/तर्पण होता है तो, दो राय हैं।
- कई ग्रन्थों में कहा है कि अमावास्या की श्राद्ध के जैसे ही यहाँ भी स्त्री वर्ग को पति के साथ ही तृप्ति करनी है, कोई अलग वरण नहीं है। ऐसे में सिर्फ ग्रहण श्राद्ध करना चाहिए।
- एक संप्रदाय में ग्रहण श्राद्ध में स्त्री वर्ग को अलग से वरण करने को कहा है (अमावास्या की श्राद्ध में नहीं)। ऐसे में ग्रहण श्राद्ध और अमावास्या श्राद्ध दोनों अलग-अलग करना चाहिए।
- अपने संप्रदाय के हिसाब से लोग श्राद्ध नियम भी निर्णय करें।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

○ कृष्ण पक्ष में, अर्थात् सूर्य ग्रहण में अमावस्या तिथि समाप्ति से पहले एवं चंद्र ग्रहण में पूर्णिमा तिथि समाप्ति से बाद, ग्रहण श्राद्ध करने का आचार है। ऐसा संभवतः इसलिए है क्योंकि कृष्ण पक्ष पितृओं से जुड़ा है। लेकिन यह साध्य नहीं होगा जब अपने जगह में अमावास्या तिथि के बाद सूर्य ग्रहण शुरू होता है (पिछला "ज्यौतिष विवरण" अनुभाग देखें)। वैसे ही ग्रहण के दौरान उदय या अस्त होने पर कृष्ण पक्ष के अंतर्गत ग्रहण यदि (पर्याप्त रूप से) दृश्य नहीं हो तो भी यह असाध्य हो सकता है। इसलिए, उपलब्ध समय के अनुसार करना चाहिए।

○ जह प्रत्याब्दिक श्राद्ध ग्रहण के दिन प्रात होता है उस को दूसरे दिन करना पड़ सकता है। इस विषय का विवरण पंचांगों में एवं यहां दिए गए "इस ग्रहण के लिए सूचनाएं" अनुच्छेद में होगा।

पुण्य काल में क्या करें और क्या न करें

○ ग्रहण के समय में अनावश्य काम छोड़ें।

○ सन्ध्या काल में अगर ग्रहण हुआ तो भी सन्ध्यावन्दन ग्रहण काल के अंदर ही करना आवश्यक है। सूर्योदय या सूर्यास्त से पहले अर्ग्य दें और उसके बाद जप करना चाहिए।

○ ग्रहण के समय में किया गया जप का बहुगुणा फल मिलता है। मन्त्रोपदेश के लिए भी इस समय को उचित माना जाता है।

○ ग्रहण के समय में सोना और मल-मूत्र विसर्जन नहीं करना है। इसी लिए ग्रहण के पहले ही मल-मूत्र विसर्जन करें।

○ ग्रहण काल में किया हुआ दान का अधिक महत्व है। इसलिए जितना होगा, उतना दान करना चाहिए।

○ ग्रहण काल में सारे जल स्नान एवं अनुष्ठान के लिए गंगा समान है। सारे वैदिक जन दान लेने के लिए ब्रह्मा समान है। सारे दान भू दान समान हैं। सारे जगह

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

कुरुक्षेत्र समान है। अतः जो भी जगह में हो, स्नान दान और जप अवश्य करना चाहिए।

- अष्ट दिक्पालकों से भी ग्रहण दोष निवृत्ति के लिए प्रार्थना करने वाले स्तोत्र का जाप करना चाहिए। (यह स्तोत्र नीचे दिये गये हैं।)
- अगर ग्रहण काल बहुत कम है तो जितना होगा उतना करना चाहिए। कम से कम संक्षेप संकल्प के साथ आरंभ स्नान कर दान के लिए कुछ द्रव्य रखना चाहिए। ग्रहण श्राद्ध/तर्पण के लिए कम से कम संकल्प पुण्य काल के भीतर किया जाता है तो शेष पुण्य काल समाप्त होने के बाद भी शीघ्र ही कर सकते हैं।
- ग्रहण को नंगी आँखों से नहीं देखना चाहिए। वस्त्र, तेल, जल या आइना में उसके प्रतिबिंब को देखें।
- गर्भिणी स्त्रीयों को ग्रहण के समय में सूर्यचन्द्रों के किरणों से बचकर रहना चाहिए। इसी लिए वे ग्रहण को ऊपर बताये अनुसार भी नहीं देख सकते हैं। गर्भ के रक्षा के लिए भगवन्नाम जप करें और स्तोत्र पढ़ें।
- ग्रहण के मुक्ति के बाद पहने हुए वस्त्र के साथ मोक्ष स्नान करें। ये स्नान बहुत आवश्यक है। अगर स्नान नहीं किया ग्रहण आशौच अगले ग्रहण तक नहीं छूटेगा।
- ग्रस्तास्तमय के विषय में भी, शास्त्र के अनुसार ज्ञात मोक्ष काल के बाद ही मोक्ष स्नान करें। उसके बाद ही औपासन आदि स्मार्त अनुष्ठानों या सायन्दोह आदि श्रौत अनुष्ठानों को कर सकते हैं।

ग्रहण शांति/परिहार

- जिस राशि/नक्षत्र में ग्रहण हो रहा है, उस में जन्म लेनेवाले अगर सकते हैं तो अगला दिन होम रूप का शांति कर सकते हैं।
- जन्म राशि से ३, ६, १०, ११वां राशियों में होनेवाला ग्रहण शुभ फल देता है। २, ५, ७, ९वां राशियों में होने पर कुछ अशुभ फल देता है। १, ४, ८, १२वां राशियों

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

में होने पर ज्यादा अशुभ फल देता है।

- इसको ही ग्रहण राशि से कहने में -- ११, ८, ४, ३वां राशियों को शुभ फल। १२, ९, ७, ५वां राशियों को कुछ अशुभ फल। १, १०, ६, २वां राशियों को ज्यादा अशुभ फल।
- जिस नक्षत्र में ग्रहण हो, वह, उसके पहले और अगले नक्षत्रों, उस से १०वां (अनुजन्म) एवं १९वां (त्रिजन्म) नक्षत्रों भी ग्रहण से अशुभ फल लेते हैं।
- इसका मतलब है कि इन अशुभ फल लेनेवाले राशि/नक्षत्रों में जन्म लिए हुए लोगों को अपने पूर्व कर्मों के वजह से आनेवाले श्रम को सूचित करता है। इसी लिए उनको ज्यादा प्रयत्न के साथ ऊपर ग्रहण अनुष्ठानों एवं परिहार को करना चाहिए।
- ग्रहण परिहार के लघु पाठ नीचे दिया गया है।

पुण्य काल निर्णय

- ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ग्रहण के प्रारंभ से समाप्ति तक पुण्य काल है। अगर बादलों के वजह से सूर्य-चंद्र को देख नहीं सके तो भी।
- ग्रस्तोदय विषय में सूर्य या चंद्र की उदय के बाद ही पुण्य काल। ग्रस्तास्तमय विषय में सूर्य या चंद्र की अस्तमय तक ही पुण्य काल। अर्थात् पुण्यकाल वही है जब हमारे आँखों को ग्रहण दिखाई देती है।
- ग्रस्तास्तमय के विषय में, पुण्य काल समाप्त होने के बाद भी पहले से प्रारंभ किया गया सन्ध्या जप को मौक्ष काल तक जारी रखें।
- ग्रहण तर्पण को कृष्णपक्ष में करने का भी एक रीति है। लेखिन जैसे ही उल्लेख किया गया है कि अमावास्य के पूरा होने के बाद सूर्य ग्रहण प्रारंभ होने की संभावना है, और चंद्र के ग्रस्तास्तमय के विषय में, इसे हमेशा साध्य कहा नहीं जा सकता है। लेखिन ग्रहण होने के कारण अनुष्ठान करना आवश्यक है। इसलिए कृष्णपक्ष नहीं है तो भी अनुष्ठान करें।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

- रविवार में सूर्यग्रहण या सोमवार में चंद्र ग्रहण (सोमवार के सूर्यास्त और मंगलवार के सूर्योदय के बीच में) हुआ तो उसे चूडामणि ग्रहण के नाम से जाना जाता है। यह पुण्य काल अतुलनीय फल देता है।
- यहाँ दिया गया उदय/अस्त का समय हमारे संप्रदाय के अनुसार गणित है। यह अपवर्तन पर विचार नहीं करता है, जो क्षितिज के पास हवा द्वारा प्रकाश को झुकाता है। क्योंकि इसका आकार या माप पूर्वनिर्धारित नहीं हैं। आधुनिक संस्करण में मोटे तौर पर अपवर्तन को गिनके उदय का समय कुछ मिनट पहले और अस्त का समय कुछ मिनट बाद दिखाते हैं। लेखिन अनुष्ठान के लिए, साम्प्रदायिक रूप के गणित समय को ही लें।

॥ ग्रहण-आरंभ-स्नान-संकल्पः ॥

आचमनम्। शुक्लांबरधरं + शांतये। प्राणायामः।

॥ स्वल्पकाल-ग्रहणे लघु-संकल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षय-द्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं भारत-वर्षे भरत-खंडे
(____-नद्याः ____ तीरे / ____-पुण्य-तीर्थे)

विश्वावसु-नाम-संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुंभ-फाल्नुन-मासे कृष्ण-पक्षे
प्रथमायां शुभतिथौ भौमवासरयुक्तायां पूर्वफल्लुनी-नक्षत्रयुक्तायां धृति-योगयुक्तायां
बालव-करणयुक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां प्रथमायां शुभतिथौ -
चंद्र-ग्रहण-पुण्य-काले ग्रहण-आरंभ-स्नानम् अहं करिष्ये।

॥ दीर्घकाल-ग्रहणे महा-संकल्पः ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेरंग्रियुगं स्मरामि ॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थागतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।
श्रीरामः स्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

श्रीराम राम राम।

तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च।
योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥
श्रीहरे गोविंदं गोविंदं गोविंदं।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षय-द्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थम्

श्री-भगवतः विष्णोः नारायणस्य अचिंत्यया अपरिमितया शक्त्या ब्रियमाणस्य महाजलौघस्य मध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटिब्रह्मांडानाम् एकतमे पृथिवी-अप्-तेजो-वायु-आकाश-अहंकार-महद्-अव्यक्तैः आवरणैः आवृते अस्मिन् महति ब्रह्मांड-करंड-मध्ये चतुर्दश-भुवन-अंतर्गते भू-मंडले जंबू-पूर्क-शाक-शाल्मलि-कुश-क्रौञ्च-पुष्करारव्य-सप्त-द्वीप-मध्ये जंबू-द्वीपे भारत-किंपुरुष-हरि-इलावृत-रम्यक-हिरण्मय-कुरु-भद्राश्व-केतुमालारव्य-नव-वर्ष-मध्ये भारत-वर्षे इंद्र-चेरु-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गंधर्व-चारण-भरतारव्य-नव-खंड-मध्ये भरत-खंडे सुमेरु-निषद्-हेमकूट-हिमाचल-माल्यवत्-पारियात्रक-गंधमादन-कैलास-विंध्याचलादि-अनेकपुण्यशैलानां मध्ये दंडकारण्य-चंपकारण्य-विंध्यारण्य-वीक्षारण्य-श्वेतारण्य-वेदारण्यादि-अनेकपुण्यारण्यानां मध्ये कर्मभूमौ रामसेतु-केदारयोः मध्ये भागीरथी-यमुना-नर्मदा-त्रिवेणी-मलापहारिणी-गौतमी-कृष्णवेणी-तुंगभद्रा-कावेर्यादि-अनेकपुण्यनदी-विराजिते इंद्रप्रस्थ-यमप्रस्थ-अवंतिकापुरी-हस्तिनापुरी-अयोध्यापुरी-द्वारका-मथुरापुरी-मायापुरी-काशीपुरी-कांचीपुर्यादि-अनेकपुण्यपुरी-विराजिते -

सकल-जगत्-स्वष्टुः परार्धद्वय-जीविनः ब्रह्मणः द्वितीय-परार्धे पंचाशद्-अब्दादौ प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे अह्नि द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते स्वायंभुव-स्वारोच्चिष-उत्तम-तामस-रैवत-चाक्षुषारव्येषु षष्ठु मनुषु अतीतेषु सप्तमे वैवस्वत-मन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये

विश्वावसु-नाम-संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुंभ-फाल्गुन-मासे कृष्ण-पक्षे प्रथमायां शुभतिथौ भौमवासरयुक्तायां पूर्वफल्गुनी-नक्षत्रयुक्तायां धृति-योगयुक्तायां बालव-करणयुक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां प्रथमायां शुभतिथौ -

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

अनादि-अविद्या-वासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्म-विशेषेण इदानींतन-मानुष-द्विजजन्म-विशेषं प्राप्तवतः मम -

जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्-क्षण-पर्यंतं बाल्ये कौमारे यौवने मध्यमे वयसि वार्धके च जागृत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु मनो-वाक्-कायाख्य-त्रिकरणचेष्टया कर्मेद्विद्य-ज्ञानेद्विद्य-व्यापारैः संभावितानाम् इह जन्मनि जन्मांतरे च ज्ञानाज्ञान-कृतानां महापातकानां महापातक-अनुमंतृत्वादीनां समपातकानाम् उपपातकानां मलिनीकरणानां गर्ह्यधन-आदान-उपजीवनादीनाम् अपात्रीकरणानां जातिभ्रंश-कराणां विहितकर्मत्याग-निंदितसमाचरणादीनां ज्ञानतः सकृत् कृतानाम् अज्ञानतः असकृत् कृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं -

महागणपत्यादि-समस्त-वैदिक-देवता-सन्निधौ (____-नद्याः पूर्वे / दक्षिणे / पश्चिमे / उत्तरे तीरे / ____-पुण्य-तीर्थे) चंद्र-ग्रहण-पुण्य-काले ग्रहण-आरंभ-स्नानम् अहं करिष्ये। (अप उपस्पृश्य।)

गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

अतिक्रूर महाकाय कल्पांतदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुम् अर्हसि॥

(प्रोक्षण-मंत्राः/स्नान-मंत्राः)

(स्नात्वा वस्त्रं धृत्वा कुलाचारवत् पुंड्रधारणं च कृत्वा आचम्य जपं कुर्यात्।)

॥ तर्पण-संकल्पः ॥

अपवित्रः पवित्रो वा + पुण्यतिथौ

(प्राचीनावीती) गोत्राणाम् + पुण्यतिथौ

चंद्र-ग्रहण-पुण्य-काले वर्गद्वय-पितृन् उद्दिश्य तिल-तर्पणं करिष्ये।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

॥ ग्रहण-परिहारः ॥

पीडितानि नक्षत्राणि

पूर्व-प्रोष्ठपदा*, शतभिषक्, उत्तर-प्रोष्ठपदा, पुनर्वसुः, विशाखा

(प्राचीन-वाक्य-गणित-दृष्टा इमानि अपि - शतभिषक्, श्रविष्ठा, आद्रा, स्वाती)

पीडिताः राशयः

अधिकम्	कुंभः*	मीनः	कटकः	वृश्चिकः
मध्यमम्	मिथुनम्	सिंहः	तुला	मकरः

(* = ग्रहणकालिकम्)

इंद्रोऽनलो दंडधरश्च रक्षः प्राचेतसो वायु-कुबेर-शर्वाः।
मज्जन्म-ऋक्षे मम राशि-संस्थे चंद्रोपरागं शमयन्तु सर्वे॥

जिन का जन्म पहले बताये राशि/नक्षत्रों में हुआ है उनको परिहार कर लेना चाहिए। ऊपर दिए गये श्लोक को एक गते पर या ताड़ के पत्ते पर लिखकर ग्रहणकाल में यथाशक्ति जप करके माथे पर बांध लेना चाहिए।

चंद्र के ग्रहण। धान की खेत चंद्र प्रीतिकर है।

इसलिए ग्रहण पूरा होने के बाद श्लोक लिखा हुआ कार्ड या पत्ते के साथ ऊपर बताये हुए धान्यों, नारियल, फल, पान, सुपारी और दक्षिणा को उसी दिन या अगले दिन दान करना चाहिए।

नीचे दिये आठ श्लोकों को यथाशक्ति पारायण करें।

॥ परिहार-स्तोत्रम् ॥

योऽसौ वज्रधरो देवः आदित्यानां प्रभुर्मतः।
सहस्रनयनः शक्रः ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥ १ ॥

मुखं यः सर्वदेवानां सप्तार्चिरमित्युतिः।
चंद्रसूर्योपरागोत्थाम् अग्निः पीडां व्यपोहतु ॥ २ ॥

यः कर्मसाक्षी लोकानां यमो महिषवाहनः।
चंद्रसूर्योपरागोत्थां ग्रहपीडां व्यपोहतु ॥ ३ ॥

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा

रक्षोगणाधिपः साक्षात् प्रलयानलसन्निभः।
उग्रः करालो निर्ऋष्टिः ग्रहपीडां व्यपोहतु॥४॥

नागपाशधरो देवः सदा मकरवाहनः।
वरुणो जललोकेशो ग्रहपीडां व्यपोहतु॥५॥

यः प्राणरूपो लोकानां वायुः कृष्णमृगप्रियः।
चंद्रसूर्योपरागोत्थां ग्रहपीडां व्यपोहतु॥६॥

योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गशूलधरो वरः।
चंद्रसूर्योपरागोत्थं कलुषं मे व्यपोहतु॥७॥

योऽसौ शूलधरो रुद्रः शंकरो वृषवाहनः।
चंद्रसूर्योपरागोत्थं दोषं नाशयतु द्रुतम्॥८॥



॥ दान-संकल्पः ॥

ममोपात्त + प्रीत्यर्थ _____ गोत्रोद्भवस्य / गोत्रोद्भवायाः _____ नक्षत्रे _____ राशौ
जातस्य / जातायाः _____ -शर्मणः / -नाम्नः / -नाम्न्याः चंद्र-ग्रहण-कालिक-राशि-
नक्षत्रादि-सूचिततया संभावितस्य सर्वविधस्य अनिष्टस्य परिहारार्थं यथाशक्ति
हिरण्यदानं करिष्ये।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त-पुण्य-फलदम् अतः शांतिं प्रयच्छ मे॥

_____ गोत्रोद्भवस्य / गोत्रोद्भवायाः _____ नक्षत्रे _____ राशौ जातस्य / जातायाः
_____ -शर्मणः / -नाम्नः / -नाम्न्याः चंद्र-ग्रहण-कालिक-राशि-नक्षत्रादि-सूचिततया
संभावितस्य सर्वविधस्य अनिष्टस्य परिहारार्थम् इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं सतांबूलं
ब्राह्मणाय – तुभ्यम् / मनसा उद्दिष्टाय / यस्मै कस्मै चिद् – अहं संप्रददे न मम॥

॥ मोक्ष-स्नान-संकल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षय-द्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं चंद्र-ग्रहण-मोक्ष-स्नानं
करिष्ये।



वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा